5

नाथ मोहि तारत क्यों ना

नाथ मोहि तारत क्यों ना ? क्या तकसीर हमारी ? ।। टेक ।।
अंजन चोर महा अघकरता, सप्तविसनका धारी ।
वो ही मर सुरलोक गयो है, बाकी कछु न विचारी ।।१।। नाथ.।।
शूकर सिंह नकुल बानर से, कौन कौन व्रतधारी ?
तिनकी करनी कछु न विचारी, वे भी भये सुर भारी ।।२।। नाथ.।।
अष्टकर्म वैरी पूरबके, इनमो करी खुवारी ।
दर्शनज्ञानरतन हर लीने, दीने महादुख भारी ।।३।। नाथ.।।
अवगुण माफ करे प्रभु सबके, सबकी सुध न विसारी ।
'दौलत' दास खड़ा करजोरे, तुम दाता में भिखारी ।।४।। नाथ।।

हे स्वामी! आप इस संसार-सागर से मुझे क्यो नहीं पार करते हैं? मेरा क्या दोष है? ॥ टेक ॥

हे स्वामी अंजन चोर बडे-बडे पाप करता था और सप्त व्यसनों का धारक था, किन्तु वह भी यहाँ में मरकर देवलोक में गया है। आपने उसके पापों पर कोई ध्यान दिया ॥ १ ॥

इसी प्रकार शूकर, सिंह, नकुल ओर वानर ने भी कोई व्रतादि नही धारण कर रखे थे, परन्तु वे भी मरकर स्वर्ग में देव हुए है। आपने उनके कर्मों की ओर भी कोई ध्यान नही दिया ॥ २ ॥

हे स्वामी। ये अष्टकर्म मेरे पूर्व जन्म के शत्रु हैं। इन्होंने मेरी दुर्दशा कर रखी है, मेरे दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूपी रत्नों को मुझसे छीन लिया है ओर मुझे अपार दुख दे रखा है ॥ ३ ॥

कविवर दौलतराम कहते है कि हे स्वामी! आपने सबके अवगुणो को क्षमा किया और सभी को भली प्रकार संभाला है। अब आपका दास मैं भी आपके समक्ष हाथ जोडकर खड़ा हूँ। मेरा भी उद्धार कीजिए। हे स्वामी! आप बड़े दाता हैं ओर मै भिखारी हूँ ॥ ४ ॥